दोहे

कवि : रहीम जी

काल : 1556 - 1626

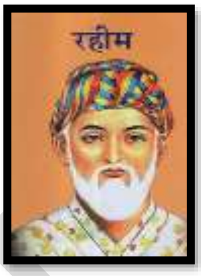

प्रश्न-अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) प्रेम का धागा, टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता ?

ज. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भांति नहीं हो पाता क्योंकि इसमें अविश्वाश और संदेह रूपी गांठ पड़ जाती है।

(ख) हमें अपना दु:ख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए ? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है ?

ज. हमें अपना दु:ख दूसरों पर प्रकट नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होता है। अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर मजाक उडाते हैं।

(ग) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है ?

ज. पंक छोटा होने पर भी लोगों और जीव-जंतुओं की प्यास बुझाता है। सागर विशाल होने पर भी किसी की प्यास नहीं बुझता है। इसलिए रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य कहा है।

(घ) एक को साधने से सब कैसे सथ जाता है ?

ज. यदि हम किसी कार्य पूरा ध्यान और लगन से करें तो जरुर सफल हो जाते हैं। इस कार्यानुभव से हम अन्य कार्य भी आसानी से कर सकते हैं।

(ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता ?

ज. कमल की संपत्ति जल है। कमल का मित्र सूर्य है। जल (संपति) नहीं तो सूर्य(मित्र)भी रक्षा नहीं करता है।

(च) अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा ?

ज. अवध नरेश श्री राम अपने पिताजी के वचन को निभाने के लिए चित्रकूट जाना पड़ा।

(छ) 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है ?

ज. नट कुंडली करने की कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है।

(ज) 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

ज. पानी के तीन अर्थ है। वे चमक आदर - सम्मान और जल। पानी (चमक) के बिना मोती अमूल्य है। पानी (आदर सम्मान) के बिना आदमी जी नहीं सकता है। पानी (जल) के बिना चून दृढ़ नहीं बनता है।

2. *निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-*

(क) टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

ज. प्रेम का धागा एक बार टूट गया तो जुड़ना असंभव है। यदि जुड़ जाए तो अविश्वास की गांठ पड़ जाते हैं।

(ख) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

ज. अपने दुख किसी को नहीं बताना चाहिए। इससे कोई लाभ नहीं होता है। सुनने वाला मजाक भी उड़ा सकता है।

(ग) रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।

ज. जड़ ही पेड़ का मूल आधार है। जड़ सींचने पर पेड़ अच्छी तरफ फूलता फलता है। इसी तरह किसी भी कार्य मुझसे आरंभ करने से सफलता जरूर मिलती हैं।

(घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं ।

ज. नेता अपनी कुंडली में सिमटकर तरह-तरह के आश्चर्यजनक करतब दिखाता है। उसी तरह दोहों में अक्षर कम होने पर भी गहरा अर्थ छुपा रहता है ।

(ङ) नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत ।

ज. मधुर संगीत सुनकर हिरण अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। मनुष्य भी कलाओं पर आनंद प्रकट कर कलाकारों की सहायता करना चाहिए। जो दूसरों से प्रसन्न होकर भी कुछ नहीं देता, वह पशु से भी हैं है।

(च) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि ।

ज. छोटी वस्तुओं का भी अपना महत्व होता है। कपड़े सिलने का कार्य सुई ही कर सकता है, तलवार नही।

(छ) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ।

ज. पानी के तीन अर्थ है। वे चमक आदर - सम्मान और जल। पानी (चमक) के बिना मोती अमूल्य है। पानी (आदर सम्मान) के बिना आदमी जी नहीं सकता है । पानी (जल) के बिना चून दृढ़ नहीं बनता है।

3. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है -

(क) जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है ।

ज. चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध- नरेस।
जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस ।।

(ख) कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती ।

ज. बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय ।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ।।

(ग) पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

ज. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

4. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-
उदाहरण: कोय कोई, जे जो

ज्यों	-	जैसे	कछु	-	कुछ
नहिं	-	नहीं	कोय	-	कोई
धनि	-	धन्य	आखर	-	अक्षर
जिय	-	जीव	थोरे	-	थोड़े
होय	-	होता	माखन	-	मक्खन
तरवारि	-	तलवार	सींचिबो	-	सींचना
मूलहिं	-	मूल	पिअत	-	पीते ही
पिआसो	-	प्यासा	बिगरी	-	बिगड़ी
आवे	-	आए	सहाय	-	सहायक
ऊबरै	-	उबरे	बिनु	-	बिन
बिथा	-	व्यथा	अठिलैहैं	-	इठलाएँगे
परिजाय	-	पड़ जाए			

परियोजना कार्य

नीति संबंधी अन्य कवियों के दोहे / कविता एकत्र कीजिए और उन दोहों / कविताओं को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

ज. आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह |
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह ॥
- तुलसीदास

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जू पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यौं पंखा की पौन॥
- वृंद

हरि-सा हीरा छांड कै, करै आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास॥
- रैदास

हमारी हिंदी
https://hamari-hindi.com